Amar Ujala 26-5-2021

चार्ल्स हार्डिंग की हत्या करने के लिए रासिबहारी ने ली थी 37 दिन की छुट्टी

माई सिटी रिपोर्टर

देहरादून। बहुत कम लोगों को इस बात की जानकारी होगी कि भारतीय वन अनुसंधान संस्थान में कार्यरत एक लिपिक ने अंग्रेजी शासन काल के दौरान न सिर्फ लार्ड चार्ल्स हार्डिंग की हत्या की योजना बनाई, वरन इसके लिए 37 दिन का अवकाश भी लिया। इतना ही नहीं अमर शहीद स्वतंत्रता सेनानी ने एफआरआई में नौकरी के दौरान बम बनाने की तकनीक सीखने के साथ ही देशभर के आंदोलनकारियों को एकजुट करने का भी काम किया।

जी हां बात देश के अग्रणी स्वतंत्रता सेनानियों में शुमार अमर शहीद रासबिहारी बोस की हो रही है। अमर शहीद की 135वीं जयंती पर कार्यक्रम हुआ, जिसमें संस्थान निदेशक समेत तमाम वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों ने इस अमर शहीद को नमन किया। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद महानिदेशक व वन अनुसंधान संस्थान निदेशक अरुण सिंह रावत ने कहा कि रासबिहारी

स्वतंत्रता सेनानी अमर शहीद रासबिहारी बोस की 135वीं जयंती पर एफआरआई में कार्यक्रम

बोस पहली बार देहरादून प्रमंथानाथ टैगोर के घर गृहशिक्षक के रूप में आए थे। उन्होंने कुछ समय वन अनुसंधान संस्थान में तो कुछ घोसी गली, पल्टन बाजार में बिताया।

उन्हांने चार सितंबर 1906 को एफआरआई में कार्यभार ग्रहण किया और बाद में 65 रुपये के वेतन पर हेड क्लर्क के पद पर पदोन्नत हुए। उन्होंने 1912 में लॉर्ड चार्ल्स हार्डिंग की हत्या के लिए 37 दिन की छुट्टी ली। जब तक अंग्रेजों को एहसास हुआ कि इसका मास्टरमाइंड कौन था, वे जापान चले गए। मई 1914 में लंबे समय तक अनुपस्थित रहने के आधार पर उनकी सेवा समाप्त कर दी गई। वर्तमान में एफआरआई परिसर में एक सड़क का नाम रास बिहारी बोस के नाम पर रखा गया है।

Garhwal Post 26-5-2021

FRI celebrates the 135th birth anniversary of Rash Behari Bose

By OUR STAFF REPORTER DEHRADUN, 25 May: Forest celebrated the 135th birth anniversary of Rash Behari Bose here, today, in virtual mode. Arun Singh Rawat, Director General, Indian Council of

Forestry Research & Education, and Director, FRI, was the Chief

Rawat recause units
Bihari Bose was one of the most prominent Indian prominent Indian revolutionaries. He worked to free India from imperialism. From the Delhi conspiracy to the formation of the Indian National Army, Bose played a crucial role in the history of the Indian freedom

Government press in Shimla at his father's wish. He was appointed the copy-holder in the appointed the copy-noted in the press and was able to master English and typewriting. Later he worked in Kasuali, but he was not happy with such jobs. He came to Dehradun as a guardian tutor in the house of Pramantha Nath Tagore. He spent some time at the Forest Doon valley and stayed at Ghosi
Gali in Paltan Bazaar. Having



tenure at FRI as a Head Clerk was the most defining moment

joined the in his revolutionary career.

The Bengal wing of the wish. He was revolutionary party sent him to copy-holder in the Dehradun with the purpose of converting members of the Indian Army to a revolutionary cult. Rash Behari tried to get himself enlisted in the Army, but he could not succeed. He then joined the Forest Research Institute. He tried to raise recruits from among the Bengeli residents in Dehradun. He maintained close contact with the revolutionary leaders

quit his home city of Calcutta in Bengal and Punjab. The job due to the infamous Alipore in the FRI was useful for him Bomb Case (1908), Bose's to execute his plans for manufacturing bombs and to direct the revolutionary movement from places which the Government did not suspect and could not easily locate.

While he was working as a derk at the FRI, he took 37 days derk at the FM, he took 37 days leave for the bomb conspiracy to assassinate Lord Charles Hardinge in 1912. By the time, the British realised who the mastermind of the conspiracy was, he escaped to Japan. He joined FRI on 4 September,

service was terminated on the grounds of prolonged absences in May 1914. A road is named after Rash Behari Bose in the university students, Sachin FRI campus.

On this occasion, an online declamation contest was organised involving university students, in which Mansi singhal, Sudan Singh and Sanchi Pandey from FRI University begged first, second and third prizes, respectively. Shambhavi, Class VIII student from St Patrick's Academy, Debrading out the base trooter. Dehradun, got the best poster award among school children. Navya Bhandari, Class X student of Ann Mary School and Diksha Uniyal, Class XII,

Kumar and Ms. Garima Kumari from Forest Research Institute secured first and second prizes, while the third prize went to Nitika Bansal from Chandigarh University. The competitions were judged by N Bala, Dr Tara Chand and D. Abishek Verma, FRI Scientists. from FRI

N Bala, Head, Forest Ecology & Climate Change Division, and Dr Vijender Panwar, Coordinator, ENVIS Centre of FRI, thanked the

The Hawk 26-5-2021

FRI Celebrates 135th Birth Anniversary Of Rash Behari Bose

• The unsung revolutionary of India's freedom struggle





in the Hawk): Government press in then joined the Forest lessearch Institute Shimila on his father's me celebrated the wish. He was appointed by the present and the present a

The Himachal Times 26-5-2021



Janbharat Mail 26-5-2021

वन अनुसंधान संस्थान ने मनाया श्री रास बिहारी बोस का 1**35** वा जन्मदिवस

संग्राम के ऋाँतिकारी श्री रास बिहारी बोस का 135 वां जन्मदिवस मनाया गया। ऑनलाइन मोड में आयोजित कार्यक्रम में श्री ए.एस. रावत, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसं धान एवं शिक्षा परिषद, देहरादन एवं निदेशक, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढाई।

इस अवसर पर श्री ए.एस. रावत, जी ने अपने संबोधन में कहा कि स्व.

श्री रास बिहारी बोस का भारतीय ऋाँतिकारियों में प्रमुख स्थान है जिन्होंने अंग्रेजी दासता से मुक्ति हेतु भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका जन्म 25 मई. 1886 को हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा अपने दादाजी की देखरेख में हुई। 1789 की फांस ऋांति का रास बिहारी पर गहरा प्रभाव पडा। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि बिहारी जी का देहरादन, उत्तराखंड में आगमन प्रमंथा नाथ टैगोर के आवास में गृहशिक्षक के रूप में हुआ।

संस्थान, देहरादून द्वारा भारत के स्वतंत्रता संस्थान में बिताया तथा वे घोसी गली, पल्टन संपर्क बनाए रखा। एफआरआई में नौकरी उनके



बाजार, देहरादन में भी रहे। देहरादन की गलियां, यहां का राजा पी.एन. टैगोर गार्डन तथा वन अनुसंधान संस्थान आदि उनके पसंदीदा स्थान रहें। ऋांतिकारी दल के बंगाल शाखा ने उन्हें भारतीय सेना के सदस्यों को ऋांतिकारी पंथ में परिवर्तित करने के उद्देश्य से देहरादुन भेजा। रास बिहारी ने खुद को सेना में भर्ती करने की कोशिश की, लेकिन वह सफल नहीं हो सके। इसके बाद उन्होंने वन अनसंधान संस्थान. देहरादन में काम किया। उन्होंने बंगाल और

देहरादून, संवाददाता। वन अनुसंधान उन्होंने अपना कुछ समय वन अनुसंधान पंजाब के ऋर्तिकारी नेताओं के साथ निकट

लिए बम बनाने की अपनी योजनाओं को अंजाम देने और उन जगहों से ऋांतिकारी आंदोलन को निर्देशित करने के लिए उपयोगी थी, जिन पर सरकार को संदेह नहीं हो सकता था और आसानी से पता नहीं चल सकता था। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए ऑनलाइन भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जहां सुश्री

मांसी सिंघल, श्री सुधान सिंह, सुश्री साची पांडे ने ऋमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए। स्कुली बच्चों की श्रेणी में पोस्टर प्रतियोगिता में सेंट पैटिक अकादमी देहरादन की आठवीं कक्षा की छात्रा सुश्री शाम्भवी ने प्रथम पुरस्कार, एन मेरी स्कूल देहरादुन की दसवीं कक्षा की छात्रा सुश्री नव्या भंडारी ने द्वितीय और कॉन्वेंट ऑफ जीसस एंड मैरी स्कूल की बारहवीं कक्षा की छात्रा सश्री दीक्षा उनियाल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

किनो मेमेंन्स केंद्र का